निर्मला

रिकार्डः-आने वाले कल की तुम तकदीर होः- ओमशान्ति प्रातः क्लास 16-12-67

ओमशान्ति। बच्चों ने गीत की लाईन सुनी। आने वाला है अमरलोक। और यह है मृत्युलोक। अमरलोक और मृत्युलोक का भी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। अब बाप पढ़ाते हैं संगम पर। आत्माओं को पढ़ाते हैं। इसलिए बच्चों को कहते हैं आत्माभिमानी होकर बैठो। यह निश्चय करना है हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। हमारी एमआबजेक्ट है ही ल०ना० वा मनुष्य से देवता बनना। मृत्युलोक के मनुष्य से अमर लोक देवता बनना। ऐसी पढ़ाई तो न कब कानों से सुनी, न किसको कहते हुये देखा जो कहे बच्चों तुम आत्माभिमानी हो बैठो। यह निश्चय करो बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। कौन सा बेहद का बाप? निराकार शिव। अभी तुम समझते हो हम पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं। अभी तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय बने हो। फिर तुमको देवता बनना है। पहले शुद्र सम्प्रदाय के थे। जो ब्राह्मण नहीं बने हैं उनको कहेंगे शुद्र-शुद्र बुधि। पत्थर बुधि। बाप आकर पत्थर बुधि से पारस बुधि बनाते हैं। यही ल०ना० की आत्मा 84 जन्मों के बाद फिर तमोप्रधान पत्थर बुधि बन जाती है। पहले सतोप्रधान पारसबुधि थे। ऐसे नहीं कहना चाहिए कि सतयुग के मालिक थे। सतयुग में विश्व के मालिक थे। फिर 84 जन्मलेते2 सीढ़ी उतरते2 सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आये हैं। फिर आत्मा में खाद पड़ती है। मनुष्य समझते नहीं हैं कि हम पत्थर बुधि हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम भी कुछ नहीं जानते थे। सिवाय जानने के किसकी पूजा करना वा याद करना इसको बलाईन्डफेथ कहा जाता है। और अपने श्रेष्ठ धर्म श्रेष्ठ कर्म को भूल जाने से फिर वह धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन पड़ते हैं। भारतवासी इस समय देवी धर्म से भी भ्रष्ट हैं। बाप समझाते हैं तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले वही देवी देवताएं परन्तु अपवित्र बने हो तो देवी-देवता कहलाये नहींसकते हो। इसलिए नाम बदल हिन्दु धर्म रख दिया है। इसको कहा जाता है ब्लाईन्डफेथ का धर्म। यह भी होता है ड्रामा पलेन अनुसार। यह भी जानते हो यह पतित दुनिया है। पावन दुनिया सतयुग को कहा जाता है। सभी एक बाप को ही पुकारते हैं हे पतितपावन आओ। वह एक ही गाडफादर है। जो जन्म-मरण रहित है। ऐसे नहीं कि नाम रूप से न्यारा कोई चीज़ है। आत्मा को वा परमात्मा का रूप बहुत सूक्ष्म है। जिसको स्टार वा बिन्दी भी कहते हैं। शिव की पूजा करते हैं। शरीर तो है नहीं। अब आत्मा बिन्दी की पूजा तो हो न सके। इसलिए उनको बड़ा बना कर पूजा करते हैं। समझते हैं हम शिव की पूजा करते हैं परन्तु उनका रूप क्या है यह नहीं जानते। समझते हैं आत्मा अगुष्ठे मिसल है। अगूष्ठा तो बड़ा चीज़ है। आत्मा के लिए तो कहते हैं भृकुटी के बीच चमकता है गजब सितारा। यह भी बातें बाप इस समय ही आकर समझाते हैं। आत्मा अविनशी है शरीर विनाशी है। आत्माएं नंगे आती हैं, यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं फिर एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। 84 लाख जन्मों का तो एक गपोड़ा लगा दिया है। अब बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं अभी तुम ब्राह्मण बने फिर देवता बनना है। कलियुगी मनुष्य है शुद्र। तुम ब्राह्मणों की एमआबजेक्ट ही है मनुष्य से देवता बनना। यह मृत्युलोक पतित दुनिया है। नई दुनिया वह थी जहां यह देवी देवताएं राज्य करते थे। एक ही इनका राज्य था। यह सारे विश्व के मालिक थे। अभी तो तमोप्रधान दुनिया है। अनेक धर्म हैं। यह देवी-देवता धर्म प्रायः लोप हो गया है। देवी-देवताओं का राज्य कब था कितना समय चला, इस वर्ल्ड के हिस्ट्री जागराफी को कोई भी नहीं जानते। बाप ही आकर तुमको समझाते हैं। यह है पादरली युनिवर्सिटी। जिसकी एमआबजेक्ट है अमर लोक का देवता बनना। इनको अमर कथा भी कहा जाता है। तुम इस नालेज से देवता बन काल पर जीत पहनते हो। वहां कब काल नहीं खा सकता। मरने का वहां नाम नहीं रहता। अब तुम काल पर जीत पहनते रहे हो। ड्रामा के पलेन अनुसार। भारतवासी भी 5-10 वर्ष का पलेन बनाते हैं। समझते हैं हम राम राज्य की स्थापन कर रहे हैं। बेहद के बाप का भी पलेन है रामराज्य बनाने का। वह तो है मनुष्य। मनुष्य रामराज्य की स्थापना कर न सके। रामराज्य कहा ही जाता है सतयुग को। इन बातों को

कोई नहीं जानते हैं। आधा कल्प है दिन ज्ञान मार्ग। आधा कल्प है रात भक्ति मार्ग। मनुष्य कितने भक्ति करते हैं। जिसमानी यात्राएं करते हैं। दिन अर्थात सतयुग त्रेता में जब देवी देवताओं का राज्य था। फिर रात में भक्ति मार्ग शुरु होता हैं। सतयुग में भक्ति होती नहीं। ज्ञान भक्ति वैराग्य। यह भी बाप समझाते हैं वैराग्य दो प्रकार का है। एक है हठयोगी निवृति मार्ग वालों का, वह घरबार छोड़ जंगल में चले जाते हैं। अभी तुमको तो बेहद का सन्यास करना है इस सारी मृत्युलोक का। बाप कहते हैं यह सारी दुनिया अभी भूत होने वाली है। ड्रामा को बहुत अच्छी रीत समझाना हैं। जूं मिसल टिक2 होती रहती हैं। जो कुछ होता हैं फिर कल्प 5000 वर्ष बादहू बहू रिपीट होगा। इसको बहुत अच्छी रीत समझने का है। समझो कोई विलायत में जाते हैं कहेंगे हम वहां नालेज पढ़ सकते हैं। बाप कहते हैं हां कहां भी बैठे तुम पढ़ सकते हो। इसमें पहले सात रोज का कोर्स लेना पड़ता हैं। हैं बहुत सहज। आत्मा को सिर्फ यह समझना होता हैहम सतोप्रधान थे तो सतोप्रधान विश्व के मालिक थे। अभी तमोप्रधान हो गये हैं। 84 जन्मों में बिलकुल ही वर्थनाट अ पेनी बन गये हैं। फिर हम पाउन्ड कैसे बने। अभी कलियुग हैं तो जरुर सतयुग होना हैं। बाप कितना सिम्पल समझाते हैं। सात दिन का कोर्स समझना हैं। कैसे हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं फिर सतोप्रधान बनना हैं। काम चिता पर बैठ तमोप्रधान बन गये हैं। अब फिर ज्ञान चिता पर बैठ सतोप्रधान बनना हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती हैं। चक्र फिरता हैं ना। अभी हैं संगम युग। फिर सतयुग होगा। अभी हम कलियुगी विशस बने हैं। सो फिर सतयुगी वायसलेस कैसे बनें। इसके लिए ही बाप रास्ता बताते हैं। पुकारते भी हैं हमारे में कोई गुण नही हैं। अब हमको ऐसा गुणवान बनाओ। जो कल्प पहले बने थे। उन्हों को ही फिर बनना हैं। बाप समझाते हैं पहले2 अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। अभी तुमको देही अभिमानी बनना हैं। अभी ही तुमको देहीअभिमानी बनने बाप समझाते हैं। ऐसे भी नहीं कि तुम सदेव देही-अभिमानी रहेंगे। सतयुग में तो नाम शरीर की ही रहती हैं। ल०ना० के नाम से ही सारा कारोबार चलती हैं। अभी यह है संगम युग जब कि बाप समझाते हैं। तुम नंगे आये अब फिर नंगे ही वापस जाना हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो यह हैं रूहानी यात्रा। आत्मा अपने रूहानी बाप को याद करती हैं। बाप को याद करने से पाप भस्म हो जावेंगे। इनको योग अग्नि भी कहा जाता हैं। याद में तो तुम कहां भी रह सकते हो। सात रोज में समझना होता हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता हैं। कैसे हम सीढ़ी उतरे हैं फिर अब इस एक ही जन्म में चढ़ती कला होती हैं। विलायत में बच्चे रहते हैं वहां भी मुरली जाती हैं। यह स्कूल हैं ना। वास्तव में यह हैं गाड फादरली युनिवर्सिटी। गीता का ही राजयोग हैं। परन्तु गीता कृष्ण की हैं नहीं। मनुष्य को भगवाननहीं कहा जाता। ब्रहमा, विष्णु, शंकर को भी देवता कहा जाता हैं। अभी तुम पुरुषार्थ कर फिर सो देवता बनते हो। प्रजापिता ब्रहमा भी जरुर यहां होगा ना। सूक्ष्म वतन में कहां से आवेगा। प्रजापिता तो मनुष्य हैं ना। प्रजा जरुर यहां ही रची जाती हैं। शुद्र से ब्राहमण बनते हो फिर देवता। इस समय तुम कहेंगेहम सो ब्राहमण बनते हैं। पहले सो शुद्र थे। अभी ब्राहमण बनें फिर सो देवता बनेंगे फिर सो क्षत्री, सो वैश्य बनेंगे। हम सो अ का अर्थ तो बाप ने बहुत सहज कर के समझाया हैं। भक्ति मार्ग में तो कह देते हैं हम सो आत्मा सो परमात्मा। इसलिए परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं। बाप कहते हैं सब में व्यापक तो आत्मा हैं। मैं कैसे व्यापक होंगा। तुम मुझे बुलाते ही हो हे पतित पावन आओ। हमको पावन बनाओ। निराकार आत्मा आयेअपना 2 रथ लेती हैं। हरेक आत्मा का अकाल तख्त यह हैं। तख्त कहो अथवा रथ कहो। बाप को तो रथ हैं नहीं। वह निराकार ही गाया जाता हैं। न सूक्ष्म शरीर हैं न स्थूल शरीर हैं। निराकार जब खुद रथ में बैठे तब बोल सके। रथ बिगर पतित को पावन कैसे बनावेंगे। बाप कहते हैं मैं निराकार आकर इनका लोन लेता हूं। टेम्परी लोन लिया हैं। इनको भाग्यशाली रथ भी कहा जाता हैं। बाप ही सृष्टि के आदि मध्य अन्त

का राज़ बता करतुम बच्चों को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। और कोई मनुष्य मात्र यहनालेज जान नहीं सकते। ऋषि-मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते। नेती2 कहते थे। गोया नास्तक हो गये। इस समय सभी नास्तक हैं। बाप आकर नास्तक बनाते हैं। रचता और रचना के×× का राज़ बाप ने बताया हैं। अब तुम्हारे सिवाय और कोई समझा न सके। तुम ही इस ज्ञान से फिर इतना ऊंच पद पाते हो। यह ज्ञान सिर्फ अभी ही कि तुम ब्राहमणों को मिलता हैं। बाप संगम पर ही आये यह ज्ञान देते हैं। सदगति देने वाला भी एक बाप ही हैं। मनुष्य मनुष्य को सदगति दे न सके। वह सब गुरु हैं भक्ति मार्ग के। ज्ञान मार्ग का गुरु एक ही है। उनको कहा जाता हैं सद्गुरु । वाह गुरु। बाकी जो भी गुरु लोग हैंउन्हों का तो कोई एमआबजेक्ट हैं नहीं। इनको पाठशाला कहा जाता हैं। एमआबजेक्ट हैं नर से नारायण बनने की। वह सब हैं भक्ति मार्ग के कथाएं। भक्ति मार्ग के ×× जो भी शास्त्र आद हैंउनसे कोई भी प्राप्ती नहीं हो सकती हैं। गीता से भी कोई प्राम्ती नहीं होती। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों सम्मुख आकर पढ़ाता हूं। जिस से तुम यह पद पाते हो। और कोई भी मनुष्य मात्र पढ़ा न सके। बाप ही पढ़ाने लिए एक ही वार संगम पर आते हैं। विषस दुनिया को वायसलेस बनाते हैं। इसमें मुख्य हैं पवित्र बनने की बात। बाप की यद में रहना हैं। इसमें ही माया विघ्न डालती हैं। तुम बाप को याद करते हो अपना वर्सा पाने लिए। यह नालेज सब बच्चों के पास जाती हैं। कब भी मुरलीमिस न हो। मुरली मिस हुई गोया अबसेन्ट पर जाती हैं। मुरली से कहां भीबेठे रिफ्रेश ×× होते रहेंगे। श्रीमत पर चलना पड़े। बाहर में भी जाते हैं तो बाप समझाते हैं पवित्र तो रहना ही ×× हैं। वैष्णव भी होना हैं। वैष्णव भी दो प्रकार के होते हैं। वैष्णववल्लभाचारी भी होते हैं। परन्तु व ह विकार में जाते हैं। पवित्र तो हैं नहीं। तुम पवित्र बन वैष्णव वंशी बनते हो। वहां तुम वैष्णव ×× र हैंगे। विकार में नहीं जावेंगे। वह हैं ही अमरलोक। यह हैं मृत्युलोक। विकार में जाते हैं। अभी तुम विष्णु पुरी में जाते हो। वहां विकार होता नहीं। वह हैं ही वायसलेस वर्ल्ड। योग बल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। वह दोनो आपस में लड़ते हैं, मक्खन बीच में तुमको मिलता हैं। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। सभी को यही पैगाम देना हैं। छोटे बच्चों को भी हक हैं। शिव बाबा के बच्चे हैं ना। तो सब का हक हैं। ×× सब को कहना हैं अपन को आत्मा समझो। मां-बाप में ज्ञान होगा तो बच्चों को भी सिखावेंगे शिव बाबा को याद करो। सिवाय शिव बाबा के दूसरा न कोई। एक बाप की याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें पढ़ाई बहुत अच्छी चाहिए। विलायत में रहते भी तुम पढ़ सकते हो। इसमें किताब आद कुछ भी न चाहिए। कहां भी बैठे तुम पढ़ सकते हो। बुधि से याद कर सकते हो। यह पढ़ाई इतनी सहज हैं। योग अथवा याद से ही बल मिलता हैं। तुम अभी विश्व के मालिक बन ×× रहे हो। बाप राजयोग सिखाकर पावन बनाते हैं। वह हैं हठयोग। यह हैं राजयोग। सन्यासी कब राजयोग सिखाये न सके। इसमें परहेज भी बहुत अच्छी चाहिए। इन(ल०ना०) जैसासर्वगुण सम्पन्न बनना हैं। खान-पान की भी बहुत अच्छी परहेज़ चाहिए। और दूसरी बात की बाप कोयाद करना हैं। तो जन्म ×× जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। इसको कहा जाता हैं सहज योग। राजाई प्राप्त करने लिए। अगर राजाई न ले तो गरीब बन ×× जावेंगे। श्रीमत पर पूरा पूरा चलने से श्रेष्ठ बन जावेंगे। इसके लिए बाप को याद करना हैं। कल्प पहले भीतुम ने ही यह ज्ञान लिया था जो फिर अब लेते हो। सतयुग में और कोई राज्य था नहीं। इसको कहा जाता है सुखधाम। अभी यह हैं दुःखधाम। और जहां से हम आत्माएं आते हैं वह हैं शान्तिधाम। शिव बाबा को वन्डर लगता हैं दुनिया में मनुष्य क्या2 करते रहते हैं। बच्चे कम पैदा हो इसके लिए माथा मारते हैं। समझते नही है यह तो बाप का ही काम है। बाप एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश कराये देते हैं। वह लोग कितने दवाईया आद निकालते हैं ×× पेदाईश कम होने लिए। बाप के पास एक ही दवाई है। एक धर्म की स्थापना ×× होनी ही हैं। वह समय आवेगा सब समझेंगे यह तो पवित्र बन रहे हैं। फिर दवाई आद की भी दरकार नहीं। तुमको बाबा ने ऐसी दवाइ दी हैं मन्मनाभव की जो 21 जन्म लिए पवित्र बनते हो। ×× अच्छा गुडमार्निंग।